मन उड़ गयो पंख लगा के, बन मोर पहुँच्यो बरसाने

प्रेम भक्ति और रंगरस की सरिता बहती जाय,
ब्रजमंडल में दिव्य धाम यह बरसाना कहलाये ।
कहे 'मधुप' जब जब भी मोहे, याद बरसाना आय,
मन मेरा मन मोर रंगीला, उड़ता उड़ता जाय ॥

मन उड़ गयो पंख लगा के, बन मोर पहुँच्यो बरसाने ।

संकेत वन और प्रेम सरोवर,
राधा बाग और पीली पोखर ।
फिर गयो महल रंगीली में,
कलगी और पंख वो रंगवाने ॥
मन उड़ गया पंख लगा के...

सज धज कर या ने भरी उडारी,
जा पहुँचयो महल अटारी ।
श्री जी मंदिर लाड़ली लाल के,
लगा झूम झूम दर्शन पाने ॥
मन उड़ गया पंख लगा के...

सांकरी खोर और गहवर वन,
मान गड़ी में डोले तन मन ।
आकरके मोरकुटी में,
लगा पंख रंगीले लहराने ॥
मन उड़ गया पंख लगा के...

मोरकुटी में संत शरण में,
बड़ो ही आनंद गुरु चरनन में ।
सुन गीत 'मधुप' के रसीले,
लगो मोर नाचने और गाने ॥
मन उड़ गया पंख लगा के...

(सर्वाधिकार लेखक आधीन सुरक्षित। भजन में अदला बदली या शब्दों से छेड़-छाड़ करना सख्त वर्जित है)

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण **'मधुप'** (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)
स्वर : सर्व मोहन (टीनू सिंह)

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/12832/title/man-ud-geyo-pankh-lga-ke-bn-mor-paunchiyo-barsaane

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |